दर्शन का इतिहास
43 धर्म, नैतिकता और राजनीति पर लॉक
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

कुछ बातें इस बारे में हैं कि उनकी एपिस्टेमोलॉजी धर्म, नैतिकता और राजनीति पर उनके लेखन के मामलों में कैसे काम करती है। शायद उनकी एपिस्टेमोलॉजी और सोच के इन दूसरे क्षेत्रों के बीच कनेक्शन का सबसे ज़रूरी पॉइंट एविडेंसियलिज़्म है , जिस पर हमने पिछली बार ज़ोर दिया था। यानी, उनका इस बात पर ज़ोर कि हमें अपनी मान्यताओं को सबूतों के हिसाब से बनाना चाहिए, कि हमें अपनी मान्यताओं को सबूतों के हिसाब से बनाना चाहिए।

अब, जब बात रेवेलेशन और रीज़न, विश्वास और रीज़न के बारे में उनकी चर्चा की आती है, तो इसका बहुत साफ़ असर होता है, जिसके बारे में वे असल में, इंसानी समझ पर अपने एस्से की चौथी किताब के चैप्टर 18 और 19 में बात करते हैं। मैंने इसका ज़िक्र इसलिए किया ताकि आप उन्हें देख सकें क्योंकि वे हमारी एंथोलॉजी में नहीं हैं। और वे दोनों चैप्टर इस सोच पर काम करते हैं कि रेवेलेशन को उन बातों में और बातें जोड़ना माना जा सकता है जिन्हें हम सिर्फ़ रीज़न से जानते हैं।

अब, एक पल के लिए इस पर सोचिए। आपका पहला रिएक्शन हो सकता है, हाँ, जैसा कि वह ज्ञान के बारे में बात करते हैं, उसमें प्रपोज़िशन होते हैं, ऐसे प्रपोज़िशन जो जजमेंट, उनके सब्जेक्ट और प्रेडिकेट को दिखाते हैं। सब्जेक्ट, आखिरकार, ज्ञान उन आइडिया से आता है जहाँ आप किसी सब्जेक्ट के बारे में कुछ प्रेडिकेट करते हैं।

तो हम उस मतलब में ज्ञान के बारे में बात कर रहे हैं। रेवेलेशन उस ज्ञान में और प्रपोज़िशन जोड़ता है जो सिर्फ़ तर्क से नहीं पता होते। तो, रेवेलेशन तो प्रपोज़िशनल रेवेलेशन है।

और आपके अंदर का ऑर्थोडॉक्सी जॉन लॉक की तारीफ़ करने का मन कर सकता है, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि वह डिवाइन रेवेलेशन के बारे में अपनी सोच को सिर्फ़ प्रपोज़िशन जोड़ने तक ही सीमित रखते हैं। कहने का मतलब है, धार्मिक अनुभव की इंटरपर्सनल इमिडिएसी ऐसी चीज़ नहीं है जिसे वह रेवेलेशन की उस डेफ़िनिशन में शामिल करते हैं। और हम इस पर बाद में थोड़ा और कमेंट करेंगे ।

ऐसा लगता है कि वह किसी भी तरह के निजी खुलासे के बारे में जो सोचते हैं, उसके बिल्कुल खिलाफ हैं , जैसे कि उस समय की कुछ धार्मिक परंपराओं, पवित्रता की परंपराओं में, वेस्ली में भी साफ़ हो रही थीं। इसे उत्साह के नाम से जाना जाता था। और उनका एक पूरा चैप्टर है जिसमें वह इस मायने में धार्मिक उत्साह का विरोध करते हैं।

अब, जैसा कि मैंने कहा, इसका असली कारण यह है कि उनका मानना है कि सारा ज्ञान प्रपोज़िशनल होता है, जिसमें प्रपोज़िशन होते हैं। इसलिए रेवेलेशन में प्रपोज़िशन होते हैं। कुछ

रेवेलेटेड प्रपोज़िशन रीज़न से भी जाने जा सकते हैं, लेकिन ज़ाहिर है, अगर वे रेवेलेशन से भी जाने जाते हैं, तो वे सिर्फ़ रीज़न से नहीं जाने जाते।

उनका कहना है कि जो बातें तर्क के हिसाब से हों, वे शायद खुलासे के तौर पर सही हों। जो बातें तर्क से परे हों, लेकिन तर्क का विरोध न करती हों, वे भी खुलासे के तौर पर सही होंगी। लेकिन जो कुछ भी तर्क के खिलाफ हो, तर्क का विरोध करे, वह खुलासे के तौर पर सही नहीं हो सकता।

उनका कहना बस इतना है कि हम जो जानते हैं कि भगवान ने कुदरती वजह से क्या बनाया है, उसे भगवान ने खास खुलासे से जो कहा है, उससे गलत साबित नहीं किया जा सकता। भगवान खुद को गलत साबित नहीं करते। लेकिन उसमें एक तरह का लॉजिकल क्राइटेरिया जुड़ा हुआ है।

तर्क को अपना गाइड बनने दें। कहे गए खुलासे के मूल्यांकन के लिए एक तर्कसंगत क्राइटेरिया। अब मान लें कि इस तरह का ईश्वरीय खुलासा सच में है, तो बताए गए प्रपोज़ल सभी प्रपोज़ल में सबसे ज़्यादा पक्के होते हैं, क्योंकि वे हमारे पास भगवान की तरफ से उनके सर्टिफ़िकेशन के साथ आते हैं, मानो वे ऐसा करते हैं।

सवाल यह है कि हमें कैसे पता चलेगा कि क्या बताया गया है? और यही बात तर्क से तय की जानी चाहिए । तो फिर खुलासा, जिसमें बातें शामिल हैं। अब, इसलिए, विश्वास को इसी संदर्भ में बताया गया है।

विश्वास, प्रस्तावक के विश्वास या गवाही पर प्रस्तावों के लिए सहमति है। यह प्रस्तावक की गवाही पर प्रस्तावों के लिए सहमति है। और मैं यहां कुछ छोटे पैराग्राफ पढ़कर सुनाता हूं कि विश्वास के संबंध में तर्क के बारे में उनका क्या कहना है।

तर्क को विश्वास से अलग माना जाता है। मैं इसे उन बातों या सच की निश्चितता या संभावना की खोज मानता हूँ, जिन तक मन अपनी कुदरती काबिलियत से आए विचारों से नतीजा निकालकर पहुँचता है। यानी, विचार सेंसेशन या रिफ्लेक्शन से जाना जाता है ।

तो फिर, तर्क का मतलब है कुदरती तरीकों से मिले विचारों से निकले प्रस्तावों की पक्की या संभावना की खोज। दूसरी ओर, विश्वास किसी भी ऐसे प्रस्ताव को मानना है जो तर्क से नहीं, बल्कि प्रस्ताव देने वाले के भरोसे पर बनाया गया हो कि वह भगवान की तरफ से किसी अनोखे तरीके से आया है। इंसानों के लिए सच खोजने के इस तरीके को हम रेवेलेशन कहते हैं।

तो विश्वास किसी बात पर सहमति देना है। और फिर, आप खुद से पूछ सकते हैं, क्या विश्वास के बारे में उनकी सोच पूरी तरह से यही है? यह पूरी तरह से सोचने-समझने वाला काम लगता है। खैर, इसी को ध्यान में रखते हुए वह जिसे उत्साह, निजी खुलासा, अंदरूनी रोशनी जैसा खुलासा कहते हैं, जैसा कि क्वेकर परंपरा में है।

इस तरह की चीज़ों को वह छोड़ देता है। बिना वजह के खुलासे को मंज़ूरी नहीं दी जा सकती। इसलिए खुलासे और वजह।

कि जो वे नहीं कहते, उसमें ज़्यादा दिक्कतें हैं, बजाय इसके कि जो वे कहते हैं। लेकिन जो वे कहते हैं, उसे अकेले में देखें तो धर्म को बिना किसी खुलासे के देखने का एक तरीका खुलता है।

और इसलिए 18वीं सदी में डीइज़्म के विकास का श्रेय अक्सर लॉक के अनजाने असर को दिया जाता है , यानी, कोई भी सिर्फ़ तर्क से बहुत कुछ जान सकता है, और डीइज़्म सिर्फ़ तर्क के ज़रिए, बिना किसी रहस्योद्घाटन के, एक धार्मिक नज़रिया बनाने की कोशिश है। तो डीइज़्म की शुरुआत कुछ हद तक लॉक से जुड़ी है। हालांकि, आपको यह कहना होगा कि लॉक से पहले भी, ब्रिटेन में नेचुरल रिलिजन के नाम से जाने जाने वाले धर्म का काफ़ी तेज़ी से विकास हो रहा था।

कभी-कभी प्लेटोनिक संदर्भ में, लेकिन रेनेसां के बाद से, यह विकसित हो रहा है। यानी, धर्म सिर्फ़ नैचुरल नॉलेज के आधार पर , रेवेलेशन से अलग। तो डीइज़्म, एक तरफ़, उसका एक और डेवलपमेंट था, और दूसरी तरफ़, यह एक ऐसा डेवलपमेंट था जो लॉकियन एपिस्टेमोलॉजी से प्रेरित लगता है।

ठीक है, कोई सवाल है, कोई कमेंट? हाँ। तो लॉक और क्राइस्ट और मैरी क्या काम करते समय तर्क से बाहर थे? नहीं, वह खुद, आप देखिए, न केवल रहस्योद्घाटन की संभावना को मानते हैं बल्कि ईसाई रहस्योद्घाटन को भी मानते हैं, धर्मग्रंथ को मानते हैं। उनकी किताब 'द रीज़नेबलनेस ऑफ़ क्रिश्चियनिटी' में, आप उस पर एक नज़र डाल सकते हैं।

वह ईसाई धर्म को उसी तरह के रैशनल क्राइटेरिया से देखते हैं जैसा हमने बताया है, और आप उनकी बातों का किसका मतलब समझते हैं, इस पर निर्भर करता है कि उन्हें पूरी तरह से ऑर्थोडॉक्स ईसाई माना जा सकता है। क्राइस्ट के बारे में बात करते समय उनका ज़ोर क्राइस्ट को मसीहा के तौर पर देखने पर ज़्यादा होता है, बजाय इसके कि क्राइस्ट ट्रिनिटी के दूसरे अवतार हैं। लेकिन उस किताब को बस एक सरसरी नज़र से देखने पर यह साफ़ हो जाता है कि यह बाइबिल की बातों को एक साथ जोड़कर किसी तरह की सही शिक्षा देने की उनकी कोशिश है।

यह उनका काम है, द रीज़नेबलनेस ऑफ़ क्रिश्चियनिटी। धर्म पर उनका एक और काम है जिसका नाम लेटर ऑन टॉलरेशन है, जो टॉलरेशन पर एक लेटर है। जो शायद, वहाँ का कॉन्टेक्स्ट समझने में मददगार है।

यह 17वीं सदी के आखिर की बात है, जब इंग्लैंड में सिविल वॉर चल रहा था, जो धार्मिक और पॉलिटिकल लड़ाई का मिक्सचर था। इंग्लैंड में कैथोलिक-प्रोटेस्टेंट लड़ाई 17वीं सदी तक जारी रही, जिसमें जेम्स II को आखिरकार, आपको याद होगा, 1688 में एक बिना खून-खराबे वाली क्रांति में गद्दी से हटा दिया गया। और प्रोटेस्टेंट, विलियम और मैरी, गद्दी संभालने के लिए हॉलैंड से आए।

तो हर समय टेंशन रहती थी। ज़्यादा टॉलरेंस नहीं थी। असल में, उसी समय फाइव माइल एक्ट पास हुआ था, जिसमें अलग राय रखने वालों, यानी जो चर्च ऑफ़ इंग्लैंड से नहीं हैं, को एक तय साइज़ की कम्युनिटी के पाँच मील के अंदर पूजा करने से मना किया गया था।

मुझे अपने बचपन की कुछ दिलचस्प यादें हैं, जो इसके महत्व के बारे में हैं। मैं इंग्लैंड के दक्षिण-पूर्व कोने में डोवर में एक बैपटिस्ट परिवार में पला-बढ़ा। और यह उस चर्च में आदत, रिवाज की बात थी।

हर गुड फ्राइडे को, लगभग पूरा चर्च सचमुच पाँच या छह मील पैदल चलकर देश के बाहर एथॉर्न नाम के एक छोटे से गाँव में जाता था, उस छोटे से चर्च की सालगिरह मनाने के लिए जहाँ एथॉर्न में लगभग 60 या 100 लोग बैठ सकते थे। और केंट के उस पूरे हिस्से के दूसरे चर्चों के लोग भी ऐसा ही करते थे, कैंटरबरी, फोकस्टोन, हर्न बे, मार्गेट, रैम्सगेट, सैंडविचडेल, अगर आप देश के उस हिस्से को जानते हैं, तो व्हील के स्पोक से एथॉर्न के हब तक इकट्ठा होते थे। आप जानते हैं, मुझे तब तक एहसास नहीं हुआ, ओह, मुझे याद आया कि 19वीं सदी में टॉलरेंस का आदेश आने से पहले उन्हें वहाँ क्या करना पड़ता था, जिससे बैपटिस्ट को अपने होमटाउन में पूजा करने की इजाज़त मिल गई थी, आप समझ रहे हैं।

अब जॉन लॉक 17वीं सदी के आखिर में, धार्मिक सहनशीलता के लिए बहस कर रहे थे, आप देखिए। तर्क का नियम, विश्वास की आज़ादी और उस विश्वास को मानने की वकालत। हाँ।

तो उस तरह के झगड़े की स्थिति में किसी तरह के लॉजिकल बैलेंस का दूसरा रास्ता क्या है? खैर, झगड़ों में लॉजिकल बीच-बचाव का एकमात्र रास्ता पावर पॉलिटिक्स है। आप देखिए, आजकल इस देश में यूनिवर्सिटीज़ के पॉलिटिकलाइज़ेशन के साथ यही हो रहा है, पॉलिटिकल करेक्टनेस मूवमेंट के साथ, आप देखिए। खैर, यह वहाँ बहुत अलग कॉन्टेक्स्ट में चल रहा था।

तो जॉन लॉक एक बहुत ही दिलचस्प किरदार है। ठीक है। नैतिक ज्ञान।

एथिक्स के मामलों में उनकी एपिस्टेमोलॉजी कैसे काम आती है? खैर, सबसे पहले , जैसा कि आप पहले ही पढ़ चुके हैं, कोई भी नैचुरल नैतिक विचार नहीं होते हैं। कोई नैचुरल नैतिक ज्ञान नहीं होता है। उनका एंपिरिसिज़्म इसकी इजाज़त नहीं देता है, और नैचुरल विचारों के खिलाफ़ उनका तर्क इस बारे में खास है।

जॉन लॉक के पास जन्मजात विचारों के खिलाफ तर्क हैं, जैसे अलग-अलग संस्कृतियों में विश्वासों की विविधता वगैरह। तो, हमारा सारा नैतिक ज्ञान, हर दूसरे तरह के ज्ञान की तरह, आखिरकार हमारे सेंसेशन और रिफ्लेक्शन के आसान विचारों से ही मिलना चाहिए। अब, यह कैसे होगा? यह कैसे होगा? खैर, वह यह सुझाव देते हैं कि नैतिक ज्ञान पाने के तीन तरीके हैं।

एक है डेमोंस्ट्रेशन से। आपको याद होगा कि उन्होंने कहा था कि ज्ञान तीन तरह का होता है: इंट्यूशन से, डेमोंस्ट्रेशन से और सेंसेशन से।

खैर, इंट्यूशन से कुछ नहीं, लेकिन डेमोंस्ट्रेशन से, हाँ। हम भगवान के बारे में अपने ज्ञान और खुद को एक रैशनल बीइंग के रूप में जानने से मोरल नॉलेज निकाल सकते हैं। और हाँ, डेसकार्टेस के कोगिटो एर्गो सम के आधार पर, लॉक यह कहने को तैयार थे कि हम खुद को रैशनल बीइंग के रूप में जानते हैं।

मैं क्या हूँ? मैं एक सोचने वाला, एक समझदार इंसान हूँ। तो जब सिविल गवर्नमेंट पर अपने एस्से में, वह ह्यूमन राइट्स के बारे में बात करते हैं, तो वह जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह यह बताना है कि एक समझदार इंसान के लिए क्या सही है, इस बात से क्या पता चलता है कि हम समझदार इंसान हैं। असल में, उनका इससे जुड़ा एक बहुत लंबा काम है, एक काम जिसका नाम है नेचर के नियम पर एस्से, नेचर के नियम, जो एक तरह का नेचुरल मोरल लॉ पर एस्से है, नेचर के नियमों पर एक एस्से।

और उसमें, वह इस तरह के नैतिक ज्ञान के लिए तर्क देते हैं। नैतिक ज्ञान पाने का दूसरा तरीका है एहसास और सोच से, अनुभव से, यानी, क्योंकि भगवान ने नैतिकता को हमारी खुशी से जोड़ा है, इसलिए असल में, खुशी और दर्द हमारे नैतिक शिक्षक बन जाते हैं। खुशी और दर्द हमारे नैतिक शिक्षक बन जाते हैं।

और बस इसमें शामिल एंपिरिकल संभावनाओं के हिसाब से, हम कुछ नतीजों पर पहुँचते हैं कि हम क्या करेंगे और क्या नहीं करेंगे, हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। हम करते हैं। सही होना, आपने देखा, नैतिक रूप से सही होना प्रैक्टिकल यूटिलिटी का मामला बन जाता है, इसलिए लॉक, फिर से अनजाने में, यूटिलिटेरियनिज़्म की ओर रास्ता खोल रहा है, जो जल्द ही डेवलप होने वाला है।

वैसे, वह पहले नहीं हैं। अगर आप बेकन और हॉब्स को याद करें, तो आपको याद होगा कि वे ज्ञान को उसके प्रैक्टिकल इस्तेमाल के लिए महत्व देते थे। और हॉब्स का एथिक्स और पॉलिटिक्स के प्रति पूरा नज़रिया इस बात पर आधारित था कि सब के खिलाफ़ होने वाली लड़ाई से बचा जाए और ज़िंदा रहना और शांति को मुमकिन बनाया जाए, ताकि बहुत ज़रूरी इस्तेमाल हो सके।

तो नैतिक ज्ञान पाने का दूसरा तरीका। नैतिक ज्ञान पाने का तीसरा तरीका बाइबिल के खुलासे से है। बाइबिल हमें बहुत सी नैतिक बातें सिखाती है, और धर्मग्रंथ में दिए गए ईश्वरीय नैतिक नियम आखिरी कसौटी हैं, नैतिक रूप से क्या सही है, इसका सबसे बड़ा पैमाना।

तो उनकी ज्ञान-मीमांसा, धर्म पर इसके इस्तेमाल के साथ, उस तरह की नैतिकता की ओर ले जाती है जिसकी वे वकालत करेंगे। अब इसे इंसानी आज़ादी के बारे में भी देखें । याद रखें कि यह मशीनी विज्ञान का ज़माना है।

कारण, प्रभाव, मैकेनिज्म। इसलिए हॉब्स जैसे लोग पक्के डिटरमिनिस्ट बन गए थे। इच्छा या काम करने की कोई असली आज़ादी नहीं है।

दूसरी तरफ, डेसकार्टेस ने मन, यानी सोचने वाली चीज़ को साइंस के कॉज़ल मैकेनिज़्म का एक्सेप्शन बनाकर इंसानी आज़ादी को बचाने की कोशिश की थी। उनके माइंड-बॉडी डुअलिज़्म ने ही इच्छा की आज़ादी को बचाए रखा । इस मामले में लॉक डेसकार्टेस को काफी करीब से फॉलो करते हैं।

वह आज़ादी बनाए रखना चाहते हैं। इंसानी आज़ादी। लेकिन वह इंसानी आज़ादी को अपनी पसंद के हिसाब से काम करने की आज़ादी के तौर पर बताते हैं।

जो मैं चाहता हूँ वो करने या न करने की आज़ादी। काम करने की आज़ादी। इच्छा की आज़ादी, फ्री चॉइस के सवाल को वह एक बेकार बहस मानते हैं।

एक बेकार बहस। क्योंकि यह दो कैटेगरी को मिला रही है। इंसान की दो अलग-अलग ताकतों को कन्फ्यूज कर रही है।

करने या न करने की शक्ति। काम करने की शक्ति। और दूसरी ओर, सोचने, पसंद करने की शक्ति।

हाँ, हम सच में अपने कामों के बारे में सोचते और सोचते हैं। हम एक काम को दूसरे काम के बजाय करना ज़्यादा पसंद करते हैं। लेकिन पसंद अपनी मर्ज़ी से नहीं, बल्कि वजह से भी हो सकती है।

और विचार, सोच, भी उसी तरह सेंसेशन की दुनिया में जो हो रहा है, उससे पैदा होते हैं। और इसलिए यह चाहना, इच्छा करना या इच्छा करना उतना आज़ाद नहीं है, क्योंकि इच्छा, इच्छा, उन विचारों से बहुत प्रभावित होती है जो पैदा होते हैं, बल्कि यह काम हैं जो आज़ाद हैं। इसलिए जब कोई अपनी इच्छाओं के अनुसार काम करने में सक्षम होता है, तो वह करने या न करने के लिए आज़ाद होता है।

अब, यह डेसकार्टेस से कुछ अलग है। डेसकार्टेस से कुछ अलग। वह डेसकार्टेस की तरह है क्योंकि काम करने की आज़ादी मुमकिन है क्योंकि हम सोचने वाले जीव हैं, अपने कामों पर सोचते हैं और काम करते हैं।

लेकिन वह डेसकार्टेस से इस मायने में अलग हैं कि वह इच्छा की आज़ादी की उतनी बात नहीं कर रहे हैं, जितनी काम करने की आज़ादी की। काम करने की आज़ादी। और यही बात उनकी पॉलिटिकल सोच में अहम भूमिका निभाती है।

क्योंकि एक इंसान के लिए जो चीज़ सही है, जिसे एक समझदार इंसान के तौर पर काम करने की आज़ादी मिली है, ऐसे इंसान के लिए जो चीज़ सही है वह यह है कि उसे काम करने की आज़ादी दी जाए। और इसलिए आज़ादी का उसका कॉन्सेप्ट तुरंत अधिकारों की एक थ्योरी बनाना शुरू कर देता है। और जैसा कि आप में से वे लोग अच्छी तरह जानते हैं जिन्होंने अधिकारों की थ्योरी में जाने वाला कोई एथिक्स कोर्स किया है, ये कोरिलेटिव हैं।

अगर मुझे जीने का अधिकार है, तो आपको मुझे जीने की आज़ादी देनी चाहिए। अगर मुझे प्रॉपर्टी का अधिकार है, तो आपको मुझे प्रॉपर्टी रखने की आज़ादी देनी चाहिए। आज़ादी और अधिकार आपस में जुड़े हुए हैं, आप देखिए।

तो लॉक जो कर रहे हैं, वह इंसानी आज़ादी की इस तरह की थ्योरी के आधार पर पॉलिटिकल फ़िलॉसफ़ी के मामलों पर आ रहे हैं । अब, सिविल गवर्नमेंट पर अपनी दूसरी किताब में वह जो करते हैं, वह ज़रूरी है। सिविल गवर्नमेंट पर दूसरी ट्रीटीज़।

उनका पहला विचार उस समय के दूसरे पॉलिटिकल विचारों पर एक जवाब था। दूसरा उनका अपना कंस्ट्रक्टिव प्रपोज़ल है। और यह नैतिक ज्ञान और आज़ादी के विचार पर आधारित है, जिसका हमने ज़िक्र किया है।

आप यह तब देख सकते हैं जब आप ध्यान दें कि वह एक तरफ नेचर की स्थिति और दूसरी तरफ सिविल सोसाइटी के बीच अंतर करते हैं। नेचर की स्थिति में, हम लोग अलग-अलग हैं, जिनमें से हर एक के पास आज़ादी से काम करने की ताकत है। नेचर की स्थिति में, हम लोग बराबर आज़ादी और काम करने की बराबर आज़ादी वाले लोग हैं।

इसलिए, काम करने के बराबर अधिकार के साथ। और इसलिए वह कहते हैं कि प्रकृति की स्थिति में, हमारे पास प्राकृतिक अधिकार हैं। ये अधिकार हमें सिविल सोसाइटी से नहीं मिले हैं।

हमें संविधान या कानून से अधिकार मिले हैं। ये हमारे स्वाभाविक अधिकार हैं, जो भगवान ने हमें आज़ादी से काम करने की काबिलियत दी है। उन्होंने ऐसे तीन अधिकार बताए हैं।

जीने का अधिकार, आज़ादी से काम करने की आज़ादी का अधिकार। जीने का अधिकार उससे पहले आता है क्योंकि काम करने के लिए आपको जीना पड़ता है । और तीसरा, प्रॉपर्टी का अधिकार।

हालांकि वह यह कहने में बहुत सावधान हैं कि प्रॉपर्टी का अधिकार अनलिमिटेड नहीं है। प्रॉपर्टी के अधिकार पर ज़ोर देने की वजह से, लॉक को कभी-कभी फ्री एंटरप्राइज से पैदा हुई सभी समस्याओं के लिए दोषी ठहराया जाता है। अगर आप सिविल गवर्नमेंट पर उनकी दूसरी किताब पढ़ेंगे तो आप देख सकते हैं कि वह अमेरिका में बसने के बारे में बात करते हुए ऐसा कर रहे हैं।

के लिए ज़मीन साफ़ करते हैं, वे उस ज़मीन पर अपनी मेहनत और उससे होने वाली पैदावार के हकदार हैं , जब तक वे अपने और अपने आश्रितों के लिए बस उतना ही लेते हैं और दूसरों के लिए भी काफी छोड़ देते हैं। काफी दिलचस्प है। जॉन लॉक, दूसरों के लिए भी काफी छोड़ देते हैं।

अगर आप उस लिटरेचर को जानते हैं, तो यह हार्वर्ड के रॉबर्ट नोज़िक जैसे कुछ आज के लेखकों द्वारा अपनी किताब 'अनार्की, द स्टेट एंड यूटोपिया' में बताए गए असीमित एक्विजिशन राइट्स से बिल्कुल अलग है। इसलिए जॉन लॉक ने प्रॉपर्टी के अधिकार के लिए तर्क दिया। जैसे-जैसे वह

नेचर की स्थिति के बारे में इसे आगे बढ़ाते हैं, यह बहुत साफ़ हो जाता है कि यह उस क्रिएशन मैंडेट का उनका ट्रांसलेशन है जिसके बारे में उन्हें अपनी प्यूरिटन हेरिटेज में पता था।

क्रिएशन मैंडेट का मतलब है कि ऐसी ज़मीनों को बसाने में, जिन पर कभी खेती नहीं हुई, आप देखिए, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उन्हें काबू में करें और उनकी देखभाल करें, लेकिन अपने लिए काफ़ी लें और दूसरों के लिए भी काफ़ी छोड़ दें। यह स्टीवर्डशिप मैंडेट है। ठीक है, तो उनके पास नेचुरल राइट्स की एक थ्योरी है, एक तरह का नेचुरल लॉ, ठीक है, एक तरह का नेचुरल लॉ जो मुझे लगता है कि स्टोइक ट्रेडिशन में ज़्यादा है, जो समझदार लोगों के लिए सही है, न कि थॉमिस्टिक ट्रेडिशन में, जहाँ आपके पास एक टेलियोलॉजी और कुछ नेचुरल झुकाव वगैरह होते हैं।

अब , बात यह है कि प्रकृति की स्थिति में, हमारे पास ये अधिकार हैं। अधिकार होने का मतलब उन अधिकारों को मानने और बचाने का अधिकार भी है। उन अधिकारों को छीनने की कोशिशों का विरोध करना।

तो, कुदरत की हालत में, अपनी ज़िंदगी पर होने वाले हिंसक हमले का विरोध करने का अधिकार है। अपनी आज़ादी छीनने और गुलाम बनाने की कोशिशों का विरोध करने की ज़रूरत है। और अपनी प्रॉपर्टी छीनने की कोशिशों का विरोध करने, चोर का विरोध करने का अधिकार है।

और इसी संदर्भ में, इसलिए, वह भगवान के दिए अधिकारों के बारे में बात करते हैं। सिविल सोसाइटी इसी ज़रूरत से बनती है। सिविल सोसाइटी एक कॉन्ट्रैक्ट वाला अरेंजमेंट है।

एक कॉन्ट्रैक्ट वाला अरेंजमेंट जिसमें हमारी ज़िंदगी को समझदारी के नियम के तहत लाया जाता है ताकि हमारे कुदरती हक को बचाया जा सके और बढ़ाया जा सके। इंसाफ दिलाने के लिए । यह पक्का करने के लिए कि लोगों की ज़रूरतें पूरी हों ताकि वे अपने हक का सही तरीके से इस्तेमाल कर सकें।

अब, नागरिक समाज तब हर तरह के कॉन्ट्रैक्ट वाले रिश्तों को अपनाता है। इसमें शादी भी शामिल है, जिसे वह तर्क के नियम के तहत लाया गया एक कॉन्ट्रैक्ट वाला रिश्ता मानता है। इसमें मालिक-नौकर का रिश्ता भी शामिल है, जहाँ, मुझे लगता है, अपने समय में वह नौकरी के साथ-साथ अप्रेंटिसशिप के बारे में भी सोच रहा था।

और इसमें, जैसा कि हम अभी सोचते हैं, बॉडी पॉलिटिकल गवर्नमेंट भी शामिल है। ये सभी कॉन्ट्रैक्ट वाले रिश्ते हैं। तो फिर उसके पास समाज और सामाजिक नैतिकता के लिए एक कॉन्ट्रैक्ट वाला आधार है।

सरकार के लिए एक कॉन्ट्रैक्टेरियन आधार। ज़ाहिर है, सामंती राजाओं के अधिकारों, राजाओं के दैवीय अधिकारों से बहुत अलग , लेकिन थॉमस हॉब्स में जो मिलता है, उससे बहुत अलग तरह का कॉन्ट्रैक्टेरियन अरेंजमेंट, जहाँ आप अपनी जान के डर से अपने सारे अधिकार छोड़ देते हैं। लॉक में, यह राजा को अधिकार सौंपने की बात नहीं है।

यह राजा का उन अधिकारों को बचाने और बढ़ाने का काम है। यह एक बहुत अलग तरह का इंतज़ाम है। और इसलिए वह एक तरह की कॉन्स्टिट्यूशनल सरकार चाहते थे, एक ऐसी सरकार जिसमें कॉन्स्टिट्यूशनल रोक हो, शक्तियों का बँटवारा हो, राजा की शक्ति पर नैतिक सीमाएँ हों, युद्ध, क्रांति वगैरह में ताकत के इस्तेमाल पर नैतिक सीमाएँ हों।

तो यह एक पॉलिटिकल थ्योरी है जिसे वह नेचुरल राइट्स की थ्योरी के एप्लीकेशन में बनाते हैं । खैर, मुझे लगता है कि हमें लॉक के बारे में यहीं तक जाना चाहिए। क्या आप देखते हैं कि यह कैसे एक साथ जुड़ा हुआ है, चीज़ की कंटिन्यूटी? रयान? मुझे शक है कि वह एक रिवील्ड मोरैलिटी की अपनी समझ को अपने कॉन्सेप्चुअलिज़्म के साथ कैसे कम्पैटिबल करते हैं।

मेरा मतलब है, ऐसा लगता है कि अगर कोई नैतिकता है, तो उसे हमारे अपने दिमाग से बाहर, एक तरह से, उस नैतिकता के विचारों से बाहर होना चाहिए । हाँ। लेकिन, सवाल यह है कि नैतिकता के बारे में हमारे विचार क्या हैं? आप देखिए, यूनिवर्सल चीज़ों के बारे में पुराने मध्ययुगीन यथार्थवाद के लिए, नैतिकता के आपके विचार असली यूनिवर्सल चीज़ों, मेटाफिजिकल चीज़ों के विचार हैं जो या तो प्रकृति में काम कर रही हैं या किसी प्लेटोनिक अर्थ में पारलौकिक हैं।

एक कॉन्सेप्टिस्ट के लिए, आपके आइडिया, आपके कॉन्सेप्ट, भगवान के आइडिया के आइडिया हो सकते हैं। समझे? लेकिन क्या तब वे असली और भगवान से बाहर नहीं होंगे? ओह, नहीं, लेकिन आइडिया उस मायने में असली नहीं हैं जिस तरह असली यूनिवर्सल असली होते हैं। समझे ? कॉन्सेप्टिस्ट मानता है कि भगवान के पास आइडिया हैं।

भगवान के पास आम कॉन्सेप्ट हैं, उस मायने में यूनिवर्सल कॉन्सेप्ट हैं, आप देखिए। तो कॉन्सेप्ट वाला आखिर में क्या कर रहा है, और मुझे लगता है, यह मिडिल एज में एबेलार्ड में साफ़ है, वहाँ के कॉन्सेप्ट वाला। कॉन्सेप्ट वाला यह कह रहा है कि, अब हम किस तरह से जान सकते हैं कि भगवान इस बारे में क्या सोचते हैं? तो लॉक के नैतिक ज्ञान के तरीके असल में तीन तरीके बन जाते हैं जिनसे हम कुछ अंदाज़ा लगा सकते हैं कि भगवान इंसानी नैतिकता के बारे में क्या सोचते हैं, यह कैसी होनी चाहिए।

एक तो यह है कि एक समझदार इंसान होने का क्या मतलब है। भगवान ने हमें समझदार इंसान बनाया है। इसका क्या मतलब है? दूसरा है ज़िंदगी के अनुभव से।

ज़िंदगी में हम क्या सीखते हैं ? एक तरह का आम नैतिक नियम जो साफ़ हो जाता है। और फिर तीसरा है रहस्योद्घाटन।

ये तीन तरीके हैं जिनसे हमें कुछ अंदाज़ा हो सकता है कि भगवान क्या सोचते हैं। वह बहुत साफ़ कहते हैं कि अनुभव से सीखने का तरीका, बस कुछ हद तक संभावना देता है। तीनों में सबसे पक्का तरीका है रहस्योद्घाटन।

तो मुझे नहीं लगता कि एक कॉन्सेप्ट को मानने वाले और जो कहता है कि हम जान सकते हैं कि भगवान क्या सोचते हैं, उनके बीच कोई मेल नहीं है। कॉन्सेप्ट को मानने वाला बस यही मना कर

रहा है कि ग्रीक मतलब में अलग से असली रूप, यूनिवर्सल होते हैं। उस मतलब में ऑगस्टीन के बारे में क्या? क्या आपने नहीं कहा था कि उन्हें लगता था कि वे भगवान के दिमाग में आइडिया थे? हाँ, लेकिन वे असली प्रिंसिपल भी हैं जो नेचर में काम करते हैं, रैशनेस सेमिनेल्स।

आप देखिए, भगवान के मन में हमेशा रहने वाले, हमेशा रहने वाले, हमेशा रहने वाले रूप भगवान की पहले से बनी सोच हैं। लेकिन प्रकृति में हमेशा रहने वाले रूप ही रूप हैं। हाँ, तो ऑगस्टीन एक रियलिस्ट हैं।

एक्विनास भी, इसी वजह से। डेविड? मैं एक्विनास के बारे में यह पूछने से डर रहा था क्योंकि जब मैं लॉक पढ़ रहा था, तो मुझे नहीं पता था कि क्यों, लेकिन एक्विनास मेरे दिमाग में बार-बार आता था। हाँ।

क्या वे पूरी तरह से अलग हैं या एक जैसे हैं? खैर, देखिए, मैंने अभी कहा कि एक्विनास एक रियलिस्ट हैं। हाँ, यूनिवर्सल चीज़ों के बारे में एक मॉडरेट तरह के रियलिस्ट। क्योंकि उन्हें लगता है कि असल में, एक तरह के यूनिवर्सल सिद्धांत हैं, आप देखिए, जो एक व्यक्ति होने, एक इंसान होने, बायोलॉजिकली एक जानवर होने, या एक फिजिकल प्राणी होने में शामिल हैं।

असली सिद्धांत काम करते हैं। सिर्फ़ उन प्रोसेस से मतलब नहीं जो चलते रहते हैं। बल्कि एक अंदरूनी, अंदरूनी मेटाफिजिकल सिद्धांत है जो इसे ऐसा बनाता है।

आप देखिए। अब, लॉक इस तरह से बात नहीं करते। जब लॉक नेचुरल राइट्स और नेचुरल लॉ की बात करते हैं, तो वे उस चीज़ की बात कर रहे होते हैं जो लॉजिकली इंसान की आम खासियत, इंसान होने के सार में छिपी होती है।

और सार सिर्फ़ एक कॉन्सेप्ट है, याद रखें। इंसान होने का सार यह है कि हम समझदार प्राणी हैं। क्या आप समझ रहे हैं? क्या एक्विनास ने भी नहीं कहा था कि हम, प्रकृति को देखकर, हम... हाँ।

हाँ, लेकिन आप देखिए, एक अरिस्टोटेलियन के तौर पर एक्विनास, लॉक से अलग तरह से नेचर को देखते हैं, जो अरिस्टोटेलियन नहीं हैं। जब एक्विनास नेचर को, अरिस्टोटेलियन एपिस्टेमोलॉजी को देखते हैं, तो वह, आप देखिए, एक स्पीशीज़ के उस कुल अनुभव से, वहाँ काम कर रहे असली सार की नेचर को समझने की कोशिश कर रहे हैं। उस असली रूप को जो काम कर रहा है।

अब, लॉक एब्स्ट्रैक्ट आइडियाज़ की बात करते हैं । लेकिन ध्यान दें कि वह जो कह रहे हैं, हम उन सभी सिंपल आइडियाज़ से एब्स्ट्रैक्ट कर रहे हैं जो हमारे पास हैं, आप देखिए, उनमें क्या कॉमन है। यह एक जनरल आइडिया जैसा है, आप देखिए, एक एब्स्ट्रैक्ट जनरल आइडिया।

आप देखिए, यह फ़ॉर्म कोई जनरलाइज़ेशन नहीं है। यह सिर्फ़ एक जैसी चीज़ नहीं है। यह एक असली चीज़ है।

और लॉक बस एक जैसी बातें चाहते हैं। हाँ, तो इसमें एक छोटा सा अंतर है। लेकिन, जैसा कि आपको याद होगा, थॉमस एक्विनास और कॉन्सेप्चुअलिज़्म के बीच इतना बड़ा अंतर नहीं है।

याद है जब वह यह फ़र्क करने की कोशिश करता है तो वह कितनी कन्फ्यूज़न और मुश्किल में पड़ जाता है। ठीक है, और कुछ? हाँ, जेनेल। क्या आप कॉन्सेप्चुअलिज़्म को एक पॉलिटिकल फ़िलॉसफ़ी के तौर पर पहचान सकते हैं? वह आज़ादी, काम करने की पावर, बनाम सोचने या पसंद करने की पावर की बात करता है।

मुझे ऐसा लगता है कि वह सोचने की ताकत के मुकाबले काम करने की ताकत को ज़्यादा असलियत मानते हैं। और इसी पर अमेरिका के ज़्यादातर अधिकार बने हैं। मुझे नहीं पता कि यह सोचने के अधिकार से ज़्यादा असलियत है।

देखिए, उनकी पूरी नैतिकता, जिसमें उनकी पॉलिटिकल थ्योरी भी शामिल है, का बेसिक आधार यह है कि हम समझदार लोग हैं। मैं सोचता हूँ, इसलिए मेरा वजूद है। आप जानते हैं, वह इस बात को दोहराते हैं।

और अगर बेसिक बात यह है कि हम समझदार लोग हैं, तो यह बात सच होनी चाहिए। इससे ज़्यादा सच कुछ नहीं हो सकता। आप समझ गए।

यह बात कि हमारे पास काम करने की ताकत है, सिर्फ़ इसलिए ज़रूरी है क्योंकि हम समझदार लोग हैं। अगर हमें काम करने की आज़ादी नहीं होती, तो मुझे लगता है कि हमारी समझदारी उसके लिए उतनी ज़रूरी नहीं होती। हाँ।

बेकन, हॉब्स में ऐसा ही है । जब हम आइडिया के बारे में बात कर रहे थे, तो हमने सिंपल, कॉम्प्लेक्स और एब्स्ट्रैक्ट आइडिया के बारे में बात की थी।

मैं सोच रहा था, पहले , कि क्या एब्स्ट्रैक्ट आइडियाज़ भी कॉम्प्लेक्स आइडियाज़ का ही एक टाइप हैं? हाँ। पक्का, वह शुरू में एब्स्ट्रैक्ट आइडियाज़ के बारे में बात करते हैं, कॉम्प्लेक्स आइडियाज़ वाले सेक्शन में। लेकिन फिर वह बाद में उन पर वापस आते हैं , आपको याद होगा, एक सेक्शन में जो लैंग्वेज की फिलॉसफी से डील कर रहा है।

दूसरे शब्दों में, वह अच्छी तरह जानता है कि एक एब्स्ट्रैक्ट आइडिया में सिर्फ़ एक एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन से कहीं ज़्यादा होता है। आप देखिए। जब मैं कहता हूँ कि इंसान एक रैशनल बीइंग है, तो मैं यह कहने से कहीं ज़्यादा कह रहा हूँ कि सभी इंसान सोचते हैं।

आप देखिए। और जिस तरह से उन्होंने इसे कहा है, यह एक इंसान का सार है। आप सार तक कैसे पहुँचते हैं? आप देखिए।

खैर, यह एक ज़रूरी खासियत है जिसे हमने सोचा है। और ज़रूरी खासियत के सोचने में ही हमें यह एब्स्ट्रैक्शन मिलता है। हाँ।

क्योंकि ज़रूरी खासियत का विचार बहुत हद तक एक एब्स्ट्रैक्ट आइडिया है। हाँ, चलिए इसे इस तरह से समझने की कोशिश करते हैं। एक्विनास के लिए, आप अपने अनुभव से कुछ ऐसा एब्स्ट्रैक्ट करते हैं जो नॉन-एम्पिरिकल है।

लॉक के लिए, आप किसी ऐसी चीज़ के बारे में एब्स्ट्रैक्ट तरीके से सोचते हैं जो खास मामलों में अनुभव से देखी जा सकती है । मैंने देखा कि आप खुद से उन शब्दों की रिहर्सल कर रहे थे। मैं इसे फिर से कहने की कोशिश करता हूँ।

एक्विनास में, आप किसी ऐसी चीज़ के बारे में एब्स्ट्रैक्टली सोचते हैं जो एंपिरिकली ऑब्ज़र्वेबल नहीं है। यानी, यूनिवर्सल प्रिंसिपल, इसलिए। लॉक के लिए, आप किसी ऐसी चीज़ के बारे में एब्स्ट्रैक्टली सोचते हैं जो खास मामलों में एंपिरिकली ऑब्ज़र्वेबल हो ।

लेकिन आप इसके बारे में सभी खास बातों से अलग होकर सोचें। हाँ। मुझे लगता है कि मैं उनके बात करने के तरीकों के जितना करीब पहुँच सकता हूँ, उतना ही हूँ।

हाँ, हाँ। वह यह बात बहुत जल्दी कह देगा। वह यह बात बहुत जल्दी कह देता है।

खैर, मुझे लगता है कि वह कहना चाहेंगे कि बाइबिल में ऐसा कुछ भी नहीं है जो तर्क के उलट हो। वह क्या हो सकता है? ओह, अगर कोई कहे कि उसे भगवान से यह पता चला है कि जीसस भगवान के बेटे नहीं थे। आप देखिए, यह एक खुलासे का उल्टा खुलासा होगा, है ना? एक खुद का उल्टा खुलासा।

ठीक है, मैं फिर से कोशिश करता हूँ। अगर उसे भगवान से यह पता चला कि लॉजिक के नियम गलत हैं। तो, सब बाइबिल का सच है।

हाँ, ऐसा लगता है कि वह कह रहा है कि बाइबिल की सारी शिक्षा या तो रेवेलेशन के अनुसार है या रेवेलेशन से आगे जाती है, लेकिन यह रेवेलेशन को नहीं काटती। क्या मैंने रेवेलेशन कहा? इसे बोर्ड से मिटा दो। बाइबिल की सारी शिक्षा या तो तर्क के अनुसार है या तर्क से आगे जाती है, लेकिन यह तर्क को नहीं काटती।

हाँ। मुझे लगता है कि यहीं पर जॉन लॉक की बात आती है। कम से कम यह उन पक्के नतीजों के उलट नहीं होना चाहिए जो पक्के हैं।

हाँ, आप देखिए, और यही वह चीज़ है जो एक तरह से साइंस और धर्म के बीच थोड़ा और तनाव पैदा करती है, जैसा कि 19वीं सदी में होने वाला है। आप में से जिन लोगों ने इस समय के बारे में कोई भी ऐतिहासिक चीज़ पढ़ी है, जैसे कि मार्क नॉल ने जो लिखा है, उन्हें पता होगा कि वह, इतिहासकारों की तरह, साइंस में बेकनियन आइडियल की बात करते हैं, यानी पूरी तरह से ऑब्जेक्टिव तरह के एंपिरिकल साइंस की, जिसे 18वीं सदी में न सिर्फ़ लॉक ने बल्कि स्कॉटिश रियलिस्ट्स ने भी माना था, जिनके बारे में हम बाद में बात करेंगे। और इस तरह स्कॉटिश रियलिस्ट्स, जिनका 19वीं सदी में ब्रिटेन और इस देश में ईसाई सोच पर इतना असर था, वे उस

चीज़ को खरीद रहे थे जिसे अब हम साइंटिफिक रियलिज़्म कहते हैं, यानी साइंस की एक रियलिस्टिक समझ।

तो ज़ाहिर है, असलियत में समझे गए साइंस के सच के दावों और असलियत में समझे गए धर्म के सच के दावों के बीच कुछ टकराव होगा, आप देखिए। खैर, आप कहते हैं, आप साइंस को और कैसे समझेंगे? और साइंस असलियत में तो है लेकिन सिर्फ़ दिखावे के बारे में है क्योंकि असली सच्चाई मैटर का नेचर नहीं बल्कि मन का है, आप देखिए। और आज भी, साइंस की फिलॉसफी में एक रियलिज़्म, एंटी-रियलिज़्म विवाद चल रहा है, आप देखिए।

अगर आप क्रिएशन साइंस के बिज़नेस को फॉलो करते हैं, तो इवोल्यूशन पर क्रिएशन साइंस का विवाद याद रखें, क्रिएशन साइंस मूवमेंट में जो है, मुझे लगता है, मैं उसे करीब से फॉलो नहीं करता, लेकिन जो मैंने पढ़ा है, उससे मुझे लगता है कि क्रिएशन साइंस मूवमेंट में, साइंस के बारे में बहुत ही बिना शर्त रियलिज़्म है। और इसलिए वे यह नहीं कह रहे हैं कि अब साइंस हमें असलियत के बारे में नहीं बताता, वे कह रहे हैं कि सच्चा साइंस बताता है, लेकिन इवोल्यूशनरी साइंस सच्चा साइंस नहीं है, क्रिएशन साइंस सच्चा साइंस है, आप देखिए। तो आपको वहां साइंस की दो रियलिस्टिक रीडिंग के बीच एक टकराव मिलता है, आप देखिए, कौन सा सच है।

कुछ लोग कहेंगे कि साइंस आपको सिर्फ़ कुछ खास ऑपरेशनल कंडीशन के बारे में बताता है जिनमें आगे के नतीजे देखे जा सकते हैं। इसलिए साइंस आपको असलियत के नेचर के बारे में नहीं बता सकता, खासकर पुरानी चीज़ों वगैरह के बारे में। इसलिए कोई झगड़ा नहीं है।

और दूसरे लोग फिर कहेंगे, अच्छा, एक मिनट रुको, साइंस वैसे भी इतना ऑब्जेक्टिव नहीं है। हो सकता है कि यह हमें असलियत के बारे में बताने की कोशिश कर रहा हो , लेकिन साइंटिफिक काम में हर तरह की पहले से बनी धारणाएँ काम करती हैं, और कुहनी क्रांति, आप जानते हैं, साइंटिफिक क्रांतियों के स्ट्रक्चर को ध्यान में रखते हुए, यह मानते हुए कि साइंस भले ही हमें असलियत के बारे में बताना चाहता हो, लेकिन यह असल में जो कह रहा है, वह उससे कहीं ज़्यादा साफ़ नहीं है जितना अलग-अलग साइंटिस्ट अक्सर पहचानते हैं। मैं सोच रहा हूँ कि लार्क को वेस्लेयन और धार्मिक जोश से क्या दिक्कत थी।

हाँ, उन्हें लगता है कि उत्साही लोग अपनी निजी समझ को खुलासे की तरह मान लेते हैं, जिन्हें चेक नहीं किया जा सकता। लेकिन सब तर्क से। वे लॉजिकल चेक के लिए सही नहीं हैं क्योंकि वे निजी हैं।

वे पब्लिक नहीं हैं। मैं कल डॉ. सारा माइल्स का एक निबंध पढ़ रहा था जो पर्सपेक्टिव्स के लेटेस्ट इश्यू में है, जो अमेरिकन साइंटिफिक एफिलिएशन का जर्नल है। मुझे लगता है कि यह दिसंबर का इश्यू है।

आपको लगता है कि जनवरी लेटेस्ट है? नहीं। खैर, यह दिसंबर इश्यू में था। जिसमें वह 18वीं सदी में साइंस और थियोलॉजी की बहस पर चर्चा करती हैं, और एक आखिरी सेक्शन है जिसमें वह उत्साही लोगों, खासकर वेस्ली पर चर्चा करते हैं।

एक नज़र डालें । आगे कौन से नतीजे देखे जा सकते हैं? इसलिए साइंस आपको असलियत के नेचर के बारे में नहीं बता सकता, खासकर पुरानी चीज़ों वगैरह के बारे में।

तो कोई झगड़ा नहीं है। और दूसरे लोग फिर कहेंगे, ठीक है, एक मिनट रुको, साइंस वैसे भी इतना ऑब्जेक्टिव नहीं है। हो सकता है कि यह हमें असलियत के बारे में बताने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन साइंटिफिक काम में हर तरह की पहले से बनी धारणाएँ काम करती हैं, और कुह्नियन क्रांति, आप जानते हैं, साइंटिफिक क्रांतियों के स्ट्रक्चर को ध्यान में रखते हुए, यह मानते हुए कि साइंस भले ही हमें असलियत के बारे में बताना चाहता हो, लेकिन यह असल में जो कह रहा है, उसमें यह उससे कहीं ज़्यादा साफ़ नहीं है जितना अलग-अलग साइंटिस्ट अक्सर पहचानते हैं।

मैं सोच रहा हूँ कि लार्क को वेस्लेयन जोश से क्या दिक्कत थी। हाँ, उसे लगता है कि जोशीले लोग अपनी निजी समझ को ही सच मान लेते हैं, जिसे तर्क से बिल्कुल भी चेक नहीं किया जा सकता। हाँ, वे लॉजिकल चेक के लायक नहीं हैं क्योंकि वे निजी हैं।

वे पब्लिक नहीं हैं। मैं कल डॉ. सारा माइल्स का एक निबंध पढ़ रहा था जो पर्सपेक्टिव्स के लेटेस्ट इश्यू में है, जो अमेरिकन साइंटिफिक एफिलिएशन का जर्नल है। मुझे लगता है कि यह दिसंबर का इश्यू है।

आपको लगता है कि जनवरी लेटेस्ट है? नहीं। खैर, यह दिसंबर इश्यू में था। जिसमें वह 18वीं सदी में साइंस और थियोलॉजी की बहस के बारे में बात कर रही हैं, और एक आखिरी सेक्शन है जिसमें वह उत्साही लोगों और खासकर वेस्ली के बारे में बात करते हैं।

एक नज़र डालिए । इतना ही काफी है। मुझे लगता है कि आपको जितना ज़्यादा कहना है, वह साइंस के प्रोविजनैलिटी, साइंटिफिक बदलाव की सच्चाई, इस बात के बारे में है कि साइंस वैसी ऑब्जेक्टिव, एंपिरिकल रूप से पक्की चीज़ नहीं है जैसा कि लार्क के ज़माने में माना जाता था ।

आप समझ रहे हैं? और फिर ऐसी समस्याएं हैं जिन्हें हमें यहां भी पहचानना होगा , जिसमें हर्मेन्यूटिकल सवाल हैं जो लॉक के समय में सोचे गए सवालों से कहीं ज़्यादा मुश्किल हैं। इसलिए मुझे लगता है कि लॉक ने अच्छी शुरुआत की, लेकिन उन्हें इसमें शामिल समस्याओं की जटिलता का एहसास नहीं हुआ। और मुझे नहीं लगता कि प्रकृति को समझने और रहस्योद्घाटन को समझने में उन समस्याओं की जटिलता तब तक साफ तौर पर देखी जा सकती थी जब तक कि विज्ञान में और ग्रंथों को समझने में इंसानी व्यक्तिपरकता पर ज़ोर सामने नहीं आया था, जैसा कि अब 20वीं सदी में सामने आया है, यही वजह है कि व्याख्या के सिद्धांत इतने ज़रूरी हैं।

एस्तेर? तुम्हारा मतलब है, क्या लॉक में ऐसा है? नहीं। मुझे नहीं पता कि वह कभी इस बारे में बात करता है। वह माफी नहीं लिख रहा है।

क्योंकि, मेरा मतलब है, वह कहते हैं कि यह रेवेलेशन का सोर्स है। हाँ, हाँ। मैं खुद से पूछ रहा हूँ, अगर लॉक इस दावे के लिए कोई तर्क नहीं देते कि बाइबिल रेवेलेशन है, तो एक लॉकियन इसके लिए कैसे तर्क देगा? और मुझे लगता है कि लॉकियन कम से कम दो तरीकों से तर्क दे सकता है।

एक, मान लीजिए कि हमने एक भगवान के होने के लिए असरदार तरीके से तर्क दिया है, एक पर्सनल रैशनल देवता जो खुद को ज़ाहिर कर सकता है, तो कम से कम एक खुलासे की संभावना, संभावना तो है। तो आपको खुलासे के दावों की जांच करनी होगी । आपको क्या लगता है, आप खुलासे के दावों का आकलन कैसे करते हैं? खैर, अगर किसी खुलासे का कंटेंट तर्क के उलट है, तो उसे नेगेटिव माना जाएगा।

अगर यह तर्क के मुताबिक है, भले ही यह तर्क से परे हो, तो यह इसे मंज़ूर और काम करने लायक बनाता है। क्या आप इसकी संभावनाओं को और मज़बूत कर सकते हैं? खैर, उन बातों का क्या जहाँ यह मेल खाती है, जहाँ कुछ सही वजह हो सकती है? और लॉकियन समय से ब्रिटिश अपोलॉजेटिक्स में आपको जो मिला, वह अपोलॉजेटिक्स के लिए एक सबूतों वाला नज़रिया था, जिसका मैंने पिछली बार ज़िक्र किया था। तो कोशिश यह होगी कि धर्मग्रंथ में ऐसे पॉइंट्स खोजे जाएँ जिन्हें ऐतिहासिक सबूतों से पक्का किया जा सके।

वगैरह-वगैरह। दूसरे शब्दों में, धर्मग्रंथ में जो कहा गया है, उसकी सच्चाई का पता लगाने की कोशिश। यह ऐतिहासिक सबूतों से किया जा सकता है, एक जैसापन , तालमेल दिखाकर संभावना के साथ तर्क दिया जा सकता है ।

19वीं सदी के आखिर में एक और तरीका बनाया गया जिससे एक तरह के गोल -गोल घुमाव से बचने की कोशिश की गई। अगर यह एक खुलासा है, तो यह सच होना चाहिए। यह सच है, इसलिए यह एक खुलासा होना ही चाहिए।

नहीं, इससे यह साबित नहीं होता। यह तो नतीजे की पुष्टि है, आप देखिए। और उस गोलमोल बात से बचने की कोशिश यह कहना था कि, अब, बाइबिल में एक बात का दावा जीसस क्राइस्ट के बारे में है, जो सच बोलने का दावा करते हैं।

इस समय ज़रूरी नहीं कि वह भगवान होने का दावा करे, लेकिन सच बोलने का दावा करता है। और इस बात को ध्यान में रखते हुए, आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि क्या वह अपने बारे में सच बोल रहा है? अब, अगर ऐसा है, और वह अथॉरिटी, रेवेलेशन की रेवेलेशनल अथॉरिटी को सपोर्ट करता है, तो कम से कम रेवेलेशन होने की संभावना, प्रिसेबिलिटी तो है। इसलिए आपको रेवेलेशन के दावों की जांच करनी होगी ।

आपको क्या लगता है, आप खुलासे के दावों को कैसे आंकते हैं? खैर, अगर किसी खुलासे का कंटेंट तर्क के उलट है, तो उसे नेगेटिव माना जाएगा। अगर यह तर्क के मुताबिक है, भले ही यह तर्क से परे हो, तो भी यह उसे मंज़ूर, काम का बनाता रहता है। क्या आप इसकी संभावनाओं को और मज़बूत कर सकते हैं? खैर, उन पॉइंट्स के बारे में क्या जहाँ यह मेल खाता है, जहाँ कुछ सही वजह हो सकती है? और लॉकियन समय से आने वाले ब्रिटिश अपोलॉजेटिक्स में आपको जो मिला, वह अपोलॉजेटिक्स के लिए एक सबूत वाला नज़रिया था, जिसका मैंने पिछली बार ज़िक्र किया था।

तो कोशिश यह होगी कि धर्मग्रंथ में ऐसी बातें ढूंढी जाएं जिन्हें ऐतिहासिक सबूतों से कन्फर्म किया जा सके , वगैरह -वगैरह। दूसरे शब्दों में, धर्मग्रंथ में जो कहा गया है, उसकी सच्चाई का पता लगाने की कोशिश। यह ऐतिहासिक सबूतों से किया जा सकता है, कंसिस्टेंसी , कोहेरेंस दिखाकर प्रोबेबिलिटी के साथ तर्क दिया जा सकता है ।

19वीं सदी के आखिर में एक और तरीका बनाया गया जिससे एक तरह के गोल -गोल घुमाव से बचने की कोशिश की गई। अगर यह एक खुलासा है, तो यह सच होना चाहिए। यह सच है, इसलिए यह एक खुलासा होना ही चाहिए।

नहीं, इससे यह साबित नहीं होता। यह तो नतीजे को पक्का करना है। और उस गोलमोल बात से बचने की कोशिश यह कहना था कि, अब, एक बात जो बाइबिल दावा करती है, वह यह है कि इस समय भगवान का दावा है।

यह सच बोलने का दावा करता है। और इस बात को ध्यान में रखते हुए, आप अंदाज़ा लगाते हैं कि क्या वह अपने बारे में सच बोल रहा है? अब, अगर ऐसा है, और वह धर्मग्रंथ की अथॉरिटी, रेवेलेशनल अथॉरिटी को मानता है, तो उसकी अथॉरिटी को मानने में, आप धर्मग्रंथ की अथॉरिटी को मानते हैं। अब, यह प्रिंसटन के थियोलॉजिस्ट BB वॉरफील्ड का बनाया हुआ तर्क है।

क्या यह काफ़ी है, यह उन सवालों में से एक है जिस पर बहस चल रही है। लेकिन असल में, अपोलोजेटिक्स पर लॉकियन का असर सबूतों वाली दिशा में था। आप यह मानने को कैसे सही ठहराते हैं कि धर्मग्रंथ सच में ईश्वरीय रहस्योद्घाटन है? सबूत क्या है, यही उनका सवाल है।

खास जगह याद नहीं आ रही जहाँ उन्होंने इस पर बात की हो। मुझे ईसाई धर्म कितना सही है, यह देखना होगा।

लेकिन जिस परंपरा से वह आते हैं, उसे देखते हुए मैं यह कह सकता हूँ। कि पतन का असर सोच के नियमों पर उतना नहीं होता जितना हमारी सोच के नियमों को मानने की क्षमता पर होता है। सोच के नियमों पर नहीं, हम ऐसे नहीं हैं।

लेकिन सोच के नियमों को मानने की हमारी इच्छा, इमोशनल और नैतिक क्षमता पर। जो भेदभाव आता है, अंधापन, वगैरह-वगैरह। खैर, हमें छोड़ना होगा।

कोई और अंदर आने की कोशिश कर रहा है।